ज्ञानदीप

(त्रैमासिक सूचना पत्र)

भारतीय रेल सिविल इंजीनियरी संस्थान, पुणे - 411 001

आई. एस. ओ. : 9001 प्रमाणित भारतीय रेल का
प्रथम प्रशिक्षण संस्थान

संस्थान - डी ओ टी (020)
26122271, 26123436
26123680, 26111554
रेलवे - 5222, 5860, 5862

छात्रावास - डी ओ टी (020)
26130579, 26126816
26121669
रेलवे - 5896, 5897, 5898

फैक्स : 020-26128677
ई-मेल : mail@iricen.gov.in
टेलीग्राम : रेलपथ
वेब साइट : www.iricen.gov.in

वर्ष - 9 अंक - 34 अप्रैल - जून 2005

ज्ञान ज्योति से मार्गदर्शन TO BEAM AS A BEACON OF KNOWLEDGE

इस अंक में

1. इरिसेन का 47 वां स्थापना दिवस
2. रेल संरक्षा आयुक्तों की तकनीकी बैठक
3. महाप्रबंधक, दक्षिण मध्य रेलवे का इरिसेन दौरा
4. कार्य मानक स्थायी समिति की बैठक
5. रेल सप्ताह, 2005
6. राजभाषा कार्यान्वयन समिति की 87 वीं बैठक
7. विशेष पाठ्यक्रम
8. उपलब्धियां
9. विदाई समारोह
10. इरिसेन में स्वागत
11. बधाई /शुभकामनाएं
12. आपके पत्र
13. सृजन (धारावाहिक)

1. इरिसेन का 47 वां स्थापना दिवस

संस्थान ने दिनांक 21 मार्च को अपना 47वां स्थापना दिवस मनाया। श्री आर. के. सिंह , अध्यक्ष, रेलवे बोर्ड कार्यक्रम के माननीय मुख्य अतिथि थे। उपस्थित गणमान्य अतिथियों में श्री एस.बी.घोष दस्तिदार, महाप्रबंधक, मध्य रेलवे, श्री एस.आर.चौधुरी, महाप्रबंधक, पूर्वतट रेलवे, श्री बुध प्रकाश, महाप्रबंधक, रेल विद्युतीकरण, श्री एम. वी. बसरुर, सेवा निवृत्त अध्यक्ष रेलवे बोर्ड, श्री विनोद कुमार, सेवानिवृत्त महाप्रबंधक, मेट्रो रेल, कोलकाता प्रमुख थे। वर्ष 1978 बैच के भारतीय रेल इंजीनियरी सेवा के अधिकारियों, वर्ष 2004 में सम्पन्न पाठ्यक्रमों के उत्कृष्ट प्रशिक्षु अधिकारियों तथा उत्कृष्ट परिवीक्षार्थी अधिकारियों को पुरस्कार / स्मृतिचिन्ह प्रदान किए गए ।

"भारतीय रेल पर उच्चगति गलियारों का विकास : सिविल इंजीनियरों के समक्ष चुनौतियां तथा उनका असर" विषय

(स्थापना दिवस समारोह का दृश्य जिसमें अध्यक्ष रेलवे बोर्ड, महाप्रबंधक, म. रे. एवं संस्थान के निदेशक)

पर एक सेमिनार आयोजित किया गया, जिसमें 1978 बैच के भारतीय रेल इंजीनियरी सेवा के अधिकारियों ने भाग लिया।

इस अवसर पर अध्यक्ष, रेलवे बोर्ड के कर कमलों द्वारा 1978 बैच के भा. रे. सि. इं. सेवा के अधिकारियों द्वारा लिखित 12 पेपरों की एक रंगीन स्मारिका का विमोचन किया गया। समारोह के दौरान अध्यक्ष रेलवे बोर्ड ने इरिसेन द्वारा निर्मित "टी-28" पर एक फिल्म तथा "लंबी वेल्डित रेलों" पर एक पुस्तिका का भी विमोचन किया । अध्यक्ष, रेलवे बोर्ड ने स्थापना दिवस पर उत्तम आयोजन एवं उत्कृष्ट प्रबंधन हेतु संस्थान को एक लाख रुपये का सामूहिक पुरस्कार घोषित किया।

श्री शोभित माथुर, सहा.इंजी./उत्तर पश्चिम रेलवे को वर्ष 2000 बैच में उत्कृष्ट परिवीक्षार्थी के रुप में चुना गया। अध्यक्ष रेलवे बोर्ड ने श्री माथुर को असाधारण उपलब्धि के लिए रु. 10,000/- की नगद पुरस्कार की घोषणा की। इन्हें आर.के.जैन चल शील्ड, आलोक जैन स्मृति चल ट्राफी प्रदान की गई ।

संरक्षक	मुख्य संपादक	संपादक	सहयोग
शिवकुमार	**प्रवीणकुमार**	**अरुणाभा ठाकुर**	**अरुण चांदोलीकर**
निदेशक	उप मुख्य राजभाषा अधिकारी	राजभाषा अधीक्षक	सह प्राध्यापक
भा.रे.सि.इं.सं.पुणे	एवं प्राध्यापक - कंप्यूटर्स		**आर.जे.पाल,** रा.भा.स. II

अध्यक्ष, रेलवे बोर्ड ने इरिसेन के ग्रंथालय में **"वर्ल्ड रेलवे डिवीजन"** तथा प्रशिक्षु अधिकारियों को स्वास्थ्यवर्धक वातावरण में चाय पीने के लिए एक आच्छादित स्थान **"ईगल्स नेस्ट"** का उद्घाटन किया। संस्थान के छात्रावास कोरेगांव पार्क में नवीन क्रीड़ा संकुल का उद्घाटन तथा निदेशक के बंगले का शिलान्यास अध्यक्ष, रेलवे बोर्ड द्वारा किया गया। समारोह का सचित्र समाचार नगर के प्रमुख हिंदी, मराठी एवं अंग्रेजी दैनिक समाचार पत्रों में प्रकाशित हुआ। समारोह का मंच संचालन श्री ए.के.गुप्ता, प्राध्यापक (रेलपथ -1) द्वारा किया गया ।

2. रेल संरक्षा आयुक्तों की तकनीकी बैठक

दिनांक 21 एवं 22 जून , 2005 को श्री जी.पी.गर्ग, मुख्य रेल संरक्षा आयुक्त/लखनऊ की अध्यक्षता में रेल संरक्षा आयुक्तों की तकनीकी बैठक आयोजित की गई । संस्थान को प्रथम बार इस बैठक को आयोजित करने का गौरव प्राप्त हुआ ।

(मुख्य रेल संरक्षा आयुक्तों की तकनीकी बैठक का दृश्य)

3. महाप्रबंधक, दक्षिण मध्य रेलवे का इरिसेन दौरा

महाप्रबंधक, दक्षिण मध्य रेलवे श्री डी.एन.माथुर ने दिनांक 15 अप्रैल को संस्थान का दौरा किया। महाप्रबंधक ने संस्थान द्वारा प्रशिक्षु अधिकारियों के लिए प्रशिक्षण में गुणवत्ता बनाए रखने हेतु उठाए गए विभिन्न कदमों की सराहना की। उन्होंने ग्रंथालय, कंप्यूटर केन्द्र ,सामग्री जांच प्रयोगशाला एवं संग्रहालय का निरीक्षण किया ।

ग्रंथालय के कार्यों की विभिन्न नई विशिष्ट व्यवस्थाओं के कंप्यूटरीकरण, वर्ल्ड रेलवे डिवीजन एवं संस्थान की पुनर्सज्जित वेबसाइट से विशेष रुप से प्रभावित होकर किए गए प्रयासों की सराहना करते हुए महाप्रबंधक, द.म.रेलवे ने संकाय एवं कर्मचारियों के लिए रु. 25,000/- के सामूहिक पुरस्कार की घोषणा की।

(महाप्रबंधक /द.म.रेलवे संस्थान के संग्रहालय का निरीक्षण करते हुए।)

4. कार्य मानक स्थायी समिति की बैठक

दिनांक 16 एवं 17 जून, 2005 को श्री आर.पी.अग्रवाल, सलाहकार (भूमि एवं सुविधा) रेलवे बोर्ड की अध्यक्षता में संस्थान में कार्य मानक स्थायी समिति की प्रथम बैठक सम्पन्न हुई जिसमें रेलवे पर कार्यों की गुणवत्ता बढ़ाने तथा मानक तैयार करने के विषयों पर चर्चा की गई ।

5. रेल सप्ताह, 2005

संस्थान में दिनांक 15 अप्रैल को रेल सप्ताह, 2005 समारोह मनाया गया । समारोह में संस्थान के कर्मचारियों द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया जिसमें सह -प्राध्यापक, श्री अरुण चांदोलीकर, सहा.कार्य. इंजी.-1, श्री एन.आर.काले , प्रवर टाइपिस्ट श्री कालीदास शीतल प्रसाद ने भजन एवं गीत प्रस्तुत किए तथा कु. हीबा ईनामदार द्वारा नृत्य प्रस्तुत किया गया । श्री अरुण चांदोलीकर , सह- प्राध्यापक के संचालन एवं श्री विपिन पवार के निर्देशन में हिंदी अनुभाग के सौजन्य से **"किराए का मकान"** लघु नाटिका प्रस्तुत की गई जिसमें श्री विपिन पवार, राजभाषा सहायक -1, श्री जे.एम. पटेकरी, मुख्य तकनीकी सहायक, श्रीमती अरुणाभा ठाकुर, राजभाषा अधीक्षक एवं श्रीमती विद्या धानेकर, कार्यालय अधीक्षक - 2 ने भूमिकाएं अदा की । मंच सज्जा श्री राजू पाल, राजभाषा सहायक -II , वेश भूषा, श्रीमती नेहा सप्तर्षि, सहायक ग्रंथपाल एवं ध्वनि एवं प्रकाश व्यवस्था श्री प्रदीप तावड़े , तकनीशियन ने की । अंत में निदेशक द्वारा पुरस्कार वितरण किया गया ।

(नाटक मंचन के दृश्य में श्री पवार , श्रीमती ठाकुर एवं श्रीमती धानेकर)

6. राजभाषा कार्यान्वयन समिति की 87 वीं बैठक

दिनांक 06 मई को राजभाषा कार्यान्वयन समिति की 87वीं बैठक सम्पन्न हुई , जिसमें 31/03/2005 को समाप्त तिमाही की हिंदी प्रगति की समीक्षा की गई । निदेशक की अध्यक्षता में आयोजित इस बैठक में अध्यक्ष महोदय द्वारा लैपल कार्ड द्विभाषी बनाने का सुझाव दिया गया जिसे कंप्यूटर अनुभाग द्वारा तत्काल कार्रवाई करके लैपल कार्ड द्विभाषी जारी किए जा रहे हैं ।

7. विशेष पाठ्यक्रम

संस्थान में रेलवे बोर्ड की ईच्छानुसार सहायक इंजीनियरों के बीच यू. एस. एफ. डी. पर ज्ञान का प्रसार करने के दृष्टिकोण से वर्ष 2005 के दौरान यू. एस. एफ. डी. पर दो दिवसीय एप्रिसिएशन पाठ्यक्रम की नई श्रृंखला प्रारंभ की गई ।

8. उपलब्धियां

संस्थान ने इस तिमाही के दौरान निम्नलिखित उपलब्धियां हासिल की हैं।

1. **"लंबी वेल्डित रेलें -1996 पर अनुदेशों की नियमावली"** के पुनर्मुद्रण का कार्य सफलतापूर्वक सम्पन्न किया ।
2. **"वॉटर सप्लाई फॉर रेलवे इंजीनियर्स"** पुस्तक का प्रकाशन किया गया ।
3. संस्थान के कंप्यूटर केन्द्र में अत्याधुनिक प्रणाली के **"थिन क्लाइंट सिस्टम"** लगाए गए हैं जिससे प्रशिक्षु अधिकारी अधिक प्रभावी ढंग से प्रशिक्षण ग्रहण कर सकेंगे ।
4. छात्रावास में कंप्यूटरीकृत सुविधा को उन्नत करने की दृष्टि से 16 वातानुकूलित कमरों में कंप्यूटरों की व्यवस्था की गयी है । इन कंप्यूटरों में अलग से 128 केबीपीएस इंटरनेट कनेक्टिविटी की भी व्यवस्था की गयी है ।

9. विदाई समारोह

संस्थान के संकाय अध्यक्ष 1980 बैच के भारतीय रेल इंजीनियरी सेवा के अधिकारी श्री अजित पंडित ने मई 1998 में संस्थान में वरि.प्राध्यापक /पुल का पदभार ग्रहण किया था। लगभग सात वर्ष से संस्थान की सेवा से जुड़े श्री पंडित भारतीय रेल का प्रतिनिधित्व करते हुए प्रतिनियुक्ति पर अंगोला जा रहे हैं । संस्थान उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना करता है ।

दिनांक 01/03/2004 को सहायक मंडल वित्त प्रबंधक के रुप में श्री ए.वी.राणा ने संस्थान में पदभार ग्रहण किया था। श्री राणा दिनांक 19/04/2005 को स्थानांतरित होकर मध्य रेल के पुणे मंडल में सहायक मंडल वित्त प्रबंधक का पदभार संभाल लिया है । संस्थान आपके के उज्ज्वल भविष्य की कामना करता है ।

श्री विपिन पवार, राजभाषा सहायक -1 पदोन्नति पर, पुणे मंडल पर, राजभाषा अधीक्षक के रुप में स्थानांतरित हो गए हैं एवं दिनांक 09/05/2005 को पदभार ग्रहण कर लिया है । संस्थान आपके उज्ज्वल भविष्य की कामना करता है ।

10. इरिसेन में स्वागत

भा.रे.सि.इंजी.से 1980 बैच के अधिकारी श्री पी.के.मिश्रा ने दि.11/05/2005 को संस्थान के संकाय अध्यक्ष का पदभार ग्रहण कर लिया है । इसके पूर्व आप नवंबर 99 से मुख्य इंजी./ निर्माण के रुप में मद्रास, एग्मोर में कार्यरत थे । आपने मौलाना आजाद रीजनल कॉलेज ऑफ इंजीनियरिंग, भोपाल से 1979 में विशिष्टता के साथ बी.ई.(सिविल) तथा भारतीय प्रोद्योगिकी संस्थान मद्रास से मृदा इंजीनियरी में एम. टेक की उपाधि प्राप्त की है। आपने वर्ष 1982 में भारतीय रेल इंजीनियरी सेवा में प्रवेश किया। गंगा , ब्रहमपुत्र एवं कावेरी नदियों पर पुल बनाने वाले दल में आपकी भूमिका रही है। आपके द्वारा मद्रासबीच - विल्लुपुरम-तिरुचि-मदुरई-तुतीकोरीन, बैंगलोर-हुबली एवं बैंगलोर-सालेम मार्गों का गेज परिवर्तन का कार्य निष्पादन सक्रियता पूर्वक किया गया है। चालू वित्तीय वर्ष में मद्रास - अरकोणम में 18 कि.मी., मद्रास - एग्मोर-ताम्बरम उपनगरीय खंड में गेज परिवर्तन का 50 कि.मी. कार्य को पूर्ण करने में आपका विशेष योगदान रहा है । संस्थान आपका हार्दिक स्वागत करता है ।

दिनांक 19/04/2005 को श्री जी. पी. सोरडगे ने संस्थान के सहायक मंडल वित्त प्रबंधक का पदभार ग्रहण कर लिया है । इसके पूर्व आप वर्ष 1977 से 1987 तक मुंबई में कार्यरत रहे, तत्पश्चात आपने सोलापुर मंडल में कंप्यूटर प्रभारी एवं कर्मशाला लेखाकार के पद पर कार्य किया । आपको मंडल रेल प्रबंधक, सोलापुर द्वारा सराहनीय कार्य करने हेतु चार पदक प्रदान किए गए । वर्ष 1997 में आपने समूह **'ख'** सेवा में सहायक मंडल लेखा अधिकारी के रुप में सोलापुर में ही पदभार ग्रहण किया तथा 2004 में सहा.मंडल वित्त सलाहकार, रेलवे दावा अधिकरण नागपुर का पदभार संभाला इसके साथ ही आपने अतिरिक्त कार्य के रुप में प्रत्येक मंडल पर डिवीजनल कमांडर , सेंट जॉन एम्ब्यूलेंस बिग्रेड के दोहरे प्रभार के पद को संभाला है । संस्थान आपका हार्दिक स्वागत करता है ।

11. बधाई /शुभकामनाएं

अधिकारियों को जन्म दिवस पर हार्दिक बधाई

02 जुलाई - श्री ए.के.यादव , वरिष्ठ प्राध्यापक / पुल एवं प्रशिक्षण
13 जुलाई - श्री शिव कुमार , निदेशक
23 अगस्त - श्री आर.के.यादव , प्राध्यापक -रेलपथ -2
14 सितंबर - श्री सुधांशु शर्मा , प्राध्यापक -पुल
30 सितंबर - श्री प्रवीण कुमार , प्राध्यापक -कंप्यूटर्स

अधिकारियों को विवाह वर्षगांठ पर हार्दिक बधाई

03 जुलाई - श्री एन.सी.शारदा, वरिष्ठ प्राध्यापक/कार्य

कर्मचारियों को जन्म दिवस पर हार्दिक बधाई

14 जुलाई - श्रीमती नेहा सप्तर्षि, सहायक ग्रंथपाल
20 जुलाई - श्री हरी फुरसत, बढ़ई
23 जुलाई - श्री राजू ताराचंद , वरिष्ठ सफाईवाला
12 अगस्त - श्रीमती शांति सर्वनन, एम आर खलासी
12 अगस्त - श्री रामू तयप्पा, खलासी
21 अगस्त - श्री विनायक नारायण सोहोनी, तकनीकी सहायक (पुल)
22 अगस्त - श्री लव प्रकाश श्रीवास्तव, तकनीकी सहायक
24 अगस्त - श्रीमती विद्या जम्मा , प्रवर आशुलिपिक
01 सितंबर - श्री कुंडलिक तुकाराम मोरे, खलासी
06 सितंबर - श्री पंढरी मलकप्पा अष्टगे, अवर लिपिक
10 सितंबर - श्री रमेश दादू, माली
12 सितंबर - श्री विजय हीरामन , खलासी

18 सितंबर - श्री प्रवीण रासकर, खलासी
21 सितंबर - श्री शिवशंकर शिंगे ,खलासी
29 सितंबर - श्री चंद्रास एच.बठीजा, तकनीकी सहा. (कंप्यूटर्स)
30 सितंबर - श्री कालीदास शीतल प्रसाद, प्रवर टंकक

कर्मचारियों को विवाह वर्ष गांठ पर हार्दिक बधाई

07 जुलाई - श्री परमेश्वर, खलासी
11 जुलाई - श्रीमती नेहा सप्तर्षि, सहायक ग्रंथपाल
08 अगस्त - श्री मलकप्पा कांबले, वरिष्ठ प्रक्षेपक
21 अगस्त - श्री पी.विजयन, रसोईया
31 अगस्त - श्रीमती रागिनी नटराजन, वैयक्तिक सहायक

9. आपके पत्र

स्वनाम से धन्य ज्ञानदीप समूचे देश में सिविल इंजीनियरिंग एवं अन्य तकनीकी ज्ञान की ज्योति बिखेर रही है। इस सूचना पत्र के माध्यम से बहुत सी ऐसी जानकारियां मिल जाती हैं जो मोटे- मोटे ग्रंथों के पढ़ने से नहीं मिल पाती। मैं इसका नियमित पाठक हूं । गागर में सागर स्वरुप इस सूचना पत्र के नियमित प्रकाशन की कामना के साथ संपादक मंडल को स।धुवाद !

ओम प्रकाश
राजभाषा अधिकारी, पूर्व तट रेलवे एवं सचिव नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति विशाखपट्टनम

संस्थान के निदेशक को प्रेषित त्रैमासिक सूचना पत्र ज्ञानदीप (अक्टूबर - दिसंबर, 2004) के अंक -32 की प्रति तथा ज्ञानदीप परिवार की ओर से प्रेषित नूतन वर्ष 2005 की हार्दिक शुभकामना संदेश प्राप्त हुए। एतदर्थ धन्यवाद ।

उक्त सूचना पत्र में प्रकाशित संस्थान से संबंधित गतिविधियों का विवरण उपयोगी है जिससे अन्य कार्यालयों को भी प्रेरणा मिल सकेगी । संस्थान का प्रकाशपूर्ण ज्ञानदीप निरंतर मिल रहा है और भविष्य में भी प्राप्त होने की आशा रखते हैं । इस उत्कृष्ट प्रयास के लिए हमारी बधाई स्वीकार करें ।

शुभकामनाओं सहित ,

डॉ चंद्रकांत त्रिपाठी
कुलसचिव , केन्द्रीय हिंदी संस्थान मानव संसाधन विकास मंत्रालय,आगरा

10. सृजन (धारावाहिक लेख)

"भारतीय जनतंत्र , राजनीति और राजभाषा हिंदी का सवाल"

श्रीमती सरला माहेश्वरी,
उपाध्यक्ष, संसदीय राजभाषा समिति,
11,तीन मूर्ति मार्ग, नई दिल्ली

आज भारत के संविधान के 15 वर्ष नहीं, 55 वर्ष बीतने जा रहे हैं । 1963 में जब इस विषय की समीक्षा की गयी , तब अंग्रेजी को हटाने के लिए आगे और 15 वर्ष की अवधि को बढ़ा दिया गया । इसी प्रकार कई मर्तबा अकेले हिंदी को राजभाषा घोषित करने के दिन की मियाद को बढ़ाते हुए आज की स्थिति यह है कि अब इस विषय को भारत के सभी राज्यों की आम सहमति पर छोड़ दिया गया है । अब कोई निश्चित अवधि नहीं, जिस दिन भारत के सभी राज्य अकेले हिंदी को राजभाषा के रुप में अपनाने के लिए अपनी स्वीकृति दे देंगे, उसी दिन अंग्रेजी को सरकारी कामकाज की एक और भाषा के रुप में आज जो स्थान मिला हुआ है, उससे उसे हटाया जा सकेगा ।

जनतंत्र,राजभाषा और जनभाषा के संदर्भ में इस चर्चा से जो बात स्पष्ट रुप में जाहिर होती है, वह यही है कि शासन और जनता के बीच दूरी जितनी कम होगी, राजभाषा और राष्ट्रभाषा के बीच फर्क उसी अनुपात में मिटता जायेगा । वह हिंदी जिसने भारत के राष्ट्रीय आंदोलन के दौरान देशभर में एक राष्ट्रीय चेतना को विकसित करने में सबसे अहम भूमिका अदा की थी, जो एक हद तक भारत की आजादी की लड़ाई की भाषा बनी थी, वह भारत की आजादी के बाद यदि स्वतंत्र भारत की अकेली राजभाषा नहीं बन पायी तो इसके मूल में निश्चित तौर पर स्वतंत्र भारत में जनतंत्र की कुछ ऐसे कमजोरियां रही हैं, जिनके कारण भारत का जनतंत्र सच्चे अर्थों में भारत की जनता का, जनता के द्वारा और जनता के लिए शासन का रुप नहीं ले पाया है । यह अकेली सच्चाई भारत के शासन और भारत की जनता के बीच आज भी दूरी बनी हुई है, उसे उद्घाटित करती हैं।

यह स्थिति सिर्फ राष्ट्रभाषा के साथ ही नहीं है, हमारी जो स्वीकृत प्रांतीय भाषाएं हैं उन्हें भी कमोबेश इसी तरह की स्थिति से जूझना पड़ रहा है । उन सब पर भी प्रादेशिक प्रशासन की भाषा के रुप में अंग्रेजी लदी हुई है । भारत के भाषायी मानचित्र के इस स्वरुप को देखकर ही यह जरुरी हो जाता है कि हम इस बात की भी जांच करें कि हमारे देश के वर्तमान शासकों का वर्गीय चरित्र क्या है ? सामंतवाद और साम्राज्यवाद के साथ उनका क्या रिश्ता है और वे भारत के प्रति किस हद तक ईमानदार हैं ? राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने भाषाओं के प्रति साम्राज्यवादी शासकों के रवैये को बखूबी, समझा था और इसलिए वे पूरे स्वतंत्रता आंदोलन में हिंदी को महत्व देते रहे और कांग्रेस से भी कहते रहे कि उसे अपनी बैठकों की कार्रवाई हिंदी में चलानी चाहिए । 15 अगस्त 1947 को जब बी.बी.सी का संवाददाता उनसे संदेश लेने आया था, गांधी ने उससे कहा था कि दुनिया को कह दो कि गांधी अंग्रेजी नहीं जानता। अपने इसी संदेश में महात्मा गांधी ने कहा था कि "अगर स्वराज अंग्रेजी बोलने वाले भारतीयों को उन्हीं के लिए होने वाला हो, तो निस्संदेह अंग्रेजी ही राष्ट्रभाषा होगी । लेकिन अगर स्वराज करोड़ों भूखे मरने वालों, करोड़ों निरक्षर बहनों और दलितों व आत्मजों का हो और इन सबके लिए होने वाला हो तो हिंदी ही एकमात्र राष्ट्रभाषा हो सकती है ।"

- शेष आगामी अंक में

अध्यापक राष्ट्र की संस्कृति के चतुर माली होते हैं। वे संस्कारों की जड़ों में खाद देते हैं और अपने श्रम से उन्हें सींच-सींचकर महाप्राण शक्तियां बनाते हैं ।

- महर्षि अरविन्द घोष

प्रवीण कुमार, उप मुख्य राजभाषा अधिकारी एवं प्राध्यापक , कंप्यूटर्स , भारतीय रेल सिविल इंजीनियरी संस्थान , पुणे -1 द्वारा केवल सीमित निशुल्क वितरण हेतु प्रकाशित एवं मेसर्स, **कल्याणी कॉर्पोरेशन,** 1464 सदाशिव पेठ, पुणे - 411030. फोन : 24486080 द्वारा मुद्रित । (3000 प्रतियां)